दैनिक भास्कर
गुरुवार, 27 अक्टूबर 2022 लखनऊ 07

लच में लुट रहीं य विभाग मौन

देवमई ब्लॉक के 337 प्रसव ही सीएचसी जहानाबाद में कराये गये हैं यह संख्या बीते वर्ष 2021 की तुलना में बहुत कम है। गौरतलब बात यह है कि नगर में संचालित निजी अस्पतालों में सर्जन एवं एनेस्थीसिया की मौजूदगी नहीं रहती है उसके बावजूद भी झोलाछाप धड़ल्ले से ऑपरेशन कर रहे हैं। नाम न छापने की शर्त पर एक प्राइवेट अस्पताल में लेटी एक प्रसव पीड़िता ने बताया कि आशा बहू लाई है और कह रही थी कि सरकारी अस्पताल में कोई सर्जन नहीं है इसलिए यहां लाना पड़ा है और दोनों की जान बच जाएगी। इस संबंध में देवमई पीएचसी मे कार्यरत चिकित्सा प्रभारी डॉक्टर जे पी वर्मा ने बताया कि शिकायत मिली है सीएचसी जहानाबाद में भी प्रसव पीड़िताओं की संख्या बहुत कम हो गई है। जांच करवाई जा रही है चिन्हित कर शीघ्र ही ऐसी आशा बहुओं एवं स्टाफ नर्सों के खिलाफ कार्यवाही अमल में लाई जाएगी जो प्रसव पीड़िताओं को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ना ले जाकर प्राइवेट अस्पताल ले जाती हैं।

फसल अवशेष प्रबंधन योजना पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण शुरू

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा केंद्र पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय(25 से 29 अक्टूबर) कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि किसान भाई पराली को खेतों में मिलाएं तथा खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं एवं अपनी पराली में बिल्कुल भी आग न लगाएं । जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है एवं आवश्यक पोषक तत्वों का नुकसान होता है। इस अवसर पर डॉ ए के सिंह ने बताया कि फसल अवशेष हमारे खेतों के लिए भोजन का काम करते हैं। जो खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ उस में उत्पादित उपज की गुणवत्ता को भी बढ़ाते हैं। इसी क्रम में वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी द्वारा बताया गया कि फसल अवशेष प्रबंधन की कई मशीनें हैं जो पराली को आसानी से खेत में मिला सकते हैं। डॉक्टर विनोद प्रकाश ने बताया कि वेस्ट डी कंपोजर द्वारा फसल कम समय में पराली को सड़ा कर आगामी फसल बोई जा सकती है।

अमर उजाला कानपुर 27/10/2022

इजलास का गठन हुआ। (ब्यूरो)

किसान सीखेंगे फसल अवशेषों का प्रबंधन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में मंगलवार से पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर किसानों का प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ है। इन पांच दिनों में वैज्ञानिकों को फसल अवशेष से मिट्टी को उपजाऊ, खाद और अन्य संसाधनों के रूप में प्रयोग करने का तरीका बताया जाएगा। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को बताया कि पराली को खेतों में मिलाएं, इससे खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। डॉ. एके सिंह ने बताया कि फसल अवशेष हमारे खेतों के लिए भोजन का काम करते हैं। उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ उत्पादित उपज की गुणवत्ता को भी बढ़ाते हैं। इस मौके पर केवीके अध्यक्ष डॉ. रामप्रकाश, डॉक्टर निमिषा अवस्थी, डॉ. विनोद प्रकाश आदि मौजूद रहे। (संवाद)

किसानों को दी फसल अवशेष प्रबंधन की जानकारी

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा केंद्र पर आज फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण के तीसरे दिन वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों को समझाया इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने कृषकों को बताया कि स्ट्रॉचॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है तत्पश्चात हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं उन्होंने किसानों को जागरूक करते हुए बताया कि फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है साथ ही साथ मृदा की सेहत में भी सुधार होता है उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान किसानों को बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है यह मृदा में सड़कर कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि करते हैं डॉक्टर खान ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव एवं पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है। केंद्र की वैज्ञानिक डॉ मिथिलेश वर्मा ने किसानों एवं कृषक महिलाओं को फसल अवशेष प्रबंधन कर मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने के टिप्स दिए और कहा कि ऐसी भूमियों में सब्जी गुणवत्ता पर उत्पाद होती है इस अवसर पर सहतावनपुरवा, मझियार एवं पांडेय नवादा गांव के 25 किसानों ने प्रतिभाग किया।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

दिल्ली में कचरे पर बीजेपी-आप का प्रदर्शन... 12

ज्ञानवापी परिसर हिन्दुओं को सौंपने और अर्जी की... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 17
मूल्य: ₹ 3.00/-
पेज : 12
शुक्रवार | 28 अक्टूबर, 2022

मृदा की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने के लिए किया जागरूक

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में किसानों को जागरूक करने को एक कार्यक्रम चल रहा है। बीते दिन गुरुवार को फसल अवशेष प्रबंधन योजना के अंतर्गत चल रहे पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण के तीसरे दिन वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों के बारे में बताया। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.रामप्रकाश ने किसानों को बताया कि स्ट्रॉचॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिलाने के बाद हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई की जाती है। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ.खलील खान किसानों को बताया कि मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ एकमात्र ऐसा स्रोत है जिससे मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्व उपलब्ध हो जाते हैं। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने किसानों को फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में बताया। वैज्ञानिक डॉ. मिथिलेश वर्मा ने फसल अवशेष प्रबंधन कर मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने की जानकारी दी। इस अवसर पर सहतावनपुरवा, मझियार एवं पांडेय नवादा गांव के 25 किसान मौजूद रहे।

रहस्य संदेश

वर्ष : 16 अंक : 289 एटा से प्रकाशित गुरूवार 27 अक्टूबर 2022 पृष्ठ : 8

फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ

(रहस्य संदेश)

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा केंद्र पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय(25 से 29 अक्टूबर 2022) कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि किसान भाई पराली को खेतों में मिलाएं तथा खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं एवं अपनी पराली में बिल्कुल भी आग न लगाएं । जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है एवं आवश्यक पोषक तत्वों का नुकसान होता है इस अवसर पर डॉ ए के सिंह ने बताया कि फसल अवशेष

हमारे खेतों के लिए भोजन का काम करते हैं। जो खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ उस में उत्पादित उपज की गुणवत्ता को भी बढ़ाते हैं। इसी क्रम में वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी द्वारा बताया गया कि फसल अवशेष प्रबंधन की कई मशीनें हैं जो पराली को आसानी से खेत में मिला सकते हैं। डॉक्टर विनोद प्रकाश ने बताया कि वेस्ट डी कंपोजर द्वारा फसल कम समय में पराली को सड़ा कर आगामी फसल बोई जा सकती है। यह मशीनें हैप्पी सीडर,सुपर सीडर एवं मल्चर आदि है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन में पशुओं का योगदान पर जानकारी दी इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद के कई गांव के किसान प्रतिभाग कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किसानों को पराली न जलाने एवं उससे खाद बनाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक छुत्रा सिंह, राजू राजपूत, रामआसरे राजपूत सहित 25 महिला एवं पुरुष कृषक प्रतिभाग कर रहे हैं

फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा केंद्र पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय (25 से 29 अक्टूबर 2022) कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि किसान भाई पराली को खेतों में मिलाएं तथा खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं एवं अपनी पराली में बिल्कुल भी आग न लगाएं। जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है एवं आवश्यक पोषक तत्वों का नुकसान होता है इस अवसर पर डॉ ए के सिंह ने बताया कि फसल अवशेष हमारे खेतों के लिए भोजन का काम करते हैं। जो खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ उस में उत्पादित उपज की गुणवत्ता को भी बढ़ाते हैं। इसी क्रम में वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी द्वारा बताया गया कि फसल अवशेष प्रबंधन की कई मशीनें हैं जो पराली को आसानी से खेत में मिला सकते हैं। डॉक्टर विनोद प्रकाश ने बताया कि वेस्ट डी कंपोजर द्वारा फसल कम समय में पराली को सड़ा कर आगामी फसल बोई जा सकती है। यह मशीनें हैप्पी सीडर,सुपर सीडर एवं मल्चर आदि है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन में पशुओं का योगदान पर जानकारी दी। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद के कई गांव के किसान प्रतिभाग कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किसानों को पराली न जलाने एवं उससे खाद बनाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक पुष्पा सिंह, राजू राजपूत, रामआसरे राजपूत सहित 25 महिला एवं पुरुष कृषक प्रतिभाग कर रहे है।